HW 8/7/21

ODM CONNECT APP HOMEWORK

पाठ का सारांश

'तुम कब जाओगे, अतिथि' में लेखक शरद जोशी ने ऐसे लोगों पर व्यंग्य कसा है, जो दूसरों के घरों में अतिथि के रूप में आ जाते हैं। लेखक ने व्यंग्य-व्यंग्य में लोगों को यह समझाने का प्रयास किया है कि अच्छा पड़ोसी वह होता है, जो अपने आने से पूर्व सूचना दे और पूछ कर आए कि हम आ रहे हैं। एक अच्छे अतिथि की विशेषता यह है कि कुछ दिन का आतिथ्य कराए और वापस चला जाए।

लेखक के घर में एक अतिथि आए हैं। उस आए हुए अतिथि के सेवा-सत्कार में लेखक और उनकी पत्नी ने अपनी ओर से कोई कमी नहीं की है। यह सेवा-सत्कार इसलिए किया गया है कि अतिथि आने के बाद तुरंत चले जाये। परन्तु यह अतिथि नहीं जा रहे हैं। इसलिए लेखक कहते हैं कि "हे अतिथि! तुम्हें देखते ही मेरा बटुआ काँप गया था। फिर भी हमने चरमक मुस्कान के साथ तुम्हारा स्वागत किया था। रात के भोजन को मध्यम-वर्गीय डिनर जैसा भारी-भरकम बना दिया था। सोचा था कि

तुम सुबह चले जाओगे। पर ऐसा नहीं हुआ।" तीसरे दिन अतिथि कपड़े धुलवाने की फ़रमाइश की। कपड़े धुलकर आ गए लेकिन अतिथि नहीं गए। पत्नी ने सुना तो वह भी आँखें तरेरने लगी। चौथे दिन कपड़े धुलकर आ गए, फिर भी अतिथि डटे रहे। बातचीत के सभी विषय समाप्त हो गए थे। भावनाएँ गालियाँ बनती जा रही थी। सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो चुकी थी, अब भोजन में खिचड़ी बनने लगी थी। लेखक इतना गुस्से हो गए कि वह अपने अतिथि को 'गेट आउट' करना चाहते थे। लेखक मन में यह सोचते थे कि "माना तुम देवता हो किंतु मैं तो आदमी हूँ। मनुष्य और देवता ज़्यादा देर साथ नहीं रह सकते। इसलिए अपना देवता सुरक्षित रखना चाहते हो तो अपने आप विदा हो जाओ। तुम कब जाओगे अतिथि?"